प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिनांक 15 अगस्त 2003 लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधन

प्यारे देशवासियो, स्वाधीनता के इस पावनपर्व पर आप सबको मेरी शुभ कामनाएं। हर साल लाल किले के मैदान में इकट्ठा होकर, हम अपना प्यारा तिरंगा फहराते हैं। तिरंगा प्रतीक है आजादी का, स्वाभिमान का, त्याग और बलिदान का। पूरानी पीढ़ी को वे दिन जरूर याद होंगे, जब छोटी-छोटी टोलियां बनाकर, हाथों में झण्डे उठाकर, नौजवान 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा' गा कर, गली-गली और गांव-गांव घूमा करते थे।...(तालियां)

आज हम स्वतंत्रता संग्राम के सभी सेना पतियों को, योद्धाओं को तथा शहीदों को सादर नमन करते हैं। जिन बहादुर जवानों ने सीमा की रक्षा करते हुए अथवा आतंकवाद से लड़ते हुए, अपने प्राणों की आहुति दे दी, उन्हें हम श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

इस वर्ष आजादी का ये त्यौहार, सभी देशों के लगभग सभी भागों में अच्छी वर्षा का संदेश लेकर आया है। हम आशा करते हैं कि जिन प्रदेशों में बारिश कमी है, वहां भी अच्छी वर्षा होगी। पिछला साल सूखे के संकट से झूझते हुए बीता। हमने सभी सूखा ग्रस्त इलाकों को पूरी मदद दी। पर्याप्त अन्न भेजा और कहीं भी भुखमरी फैलने नहीं दी। बेजुबान जानवरों का भी हमने ख्याल रखा है।

बधाई किसानों को, जिन्होंने कड़े परिश्रम से देश के भण्डार भरे हैं। बधाई मेहनती मजदूरों को, कुशल प्रबंधकों को तथा दूरदर्शी उद्यमियों को, जिनकी उपलब्धियों ने सारी दुनिया का ध्यान खींचा है। आज भारत की अर्थव्यवस्था, विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयी है।

शुभकामनाएं सभी वैज्ञनिकों को, शिक्षकों को, साहित्यकारों और कलाकारों को तथा प्यारे बच्चो को।

अभिनन्दन सभी प्रवासी भारतीयों का। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है। हमें उन पर गर्व है। आज हम वंदन करते हैं भारत माता को, जिसकी हम सब संतान है। मजहब, जाति प्रांत और भाषा कोई भी हो, हम सब एक हैं। एकता ही हमारी शक्ति है। इस एकता में जो विविधता है, उस पर हमें नाज होना चाहिए। परंतु किसी भी हालत में, किसी भी किमत पर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को अक्षुण रखा जाना चाहिए। स्वाधीनता दिवस का ये सबसे बड़ा उपाध है।

बहनो और भाइयो, इस ऐतिहासिक लाल किले में, मैं लगातार छठी बार आप से बात कर रहा हूं। यह आपके समर्थन और स्नेह से ही संभव है।...तालियां

स्वतंत्रता के संग्रह में जिस महान भारत का सपना हमने देखा था, वो आज भी हमारी आंखों में है। कुछ हद तक सपना साकार हुआ है, बहुत कुछ होना बाकी है। इन 50 सालों में तमाम कठिनाइयों के बावजूद सभी चुनौतियों को झेलकर, भारत दुनिया में सर उठाकर खड़ा है। राष्ट्र की सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है।

भारत अपनी सुरक्षा के लिए परावलंभी नहीं हो सकता। इसीलिए 5 साल पहले मेरी सरकार ने जो पहला काम किया, वो था भारत की आत्मरक्षा के लिए अणु अस्त्रों से सम्पन्न करना। दुनिया बदल रही है, नयी चुनौतियां सामने आ रही हैं। भारत को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अधिक

शक्तिशाली बनाने की जरूरत है। पिछले 5 सालों में हमारी विदेश नीति ने विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। हमारी ओर देखने की विश्व समुदाय की दृष्टि में परिवर्तन हुआ है। दुनिया भारत को पहचानने लगी है, संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में, विश्व की एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में, आधुनिकता और प्राचीन सभ्यता के संगम के रूप में, शांति के लिए समर्पित एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में।

भाइयो और बहनो, सभी पड़ोसियो के साथ मित्रता और सहयोग के संबंध स्थापित करना हमारी नीति है। हम सब बीद विवादों को शांति के साथ सुलझाना चाहते हैं। पाकिस्तान के साथ बार-बार संबंध में सुधारने की पहल, हमारी कमजोरी नहीं, शांति प्रियता का परिचायक है। पाकिस्तान के साथ रिस्तों को सामान्य बनाने में हाल में कुछ प्रगति हुई है। परंतु आतंकवादी गतिविधियां अभी भी जारी हैं। हमारे पड़ोसी की प्रमाणिकता की परीक्ष इस बात में है कि क्या वो सीमा पर से आतंकवाद पूरी तरह से बंद करने के लिए तैयार है। हम आशा करते हैं कि पाकिस्तान भारत विरोधी रवइया छोड़ेगा। दोनों देशो की जनता अमन चैन से रहना चाहती है। पाकिस्तान के मित्रों से मैं कहता रहा हूं, हमें लड़ते-लड़ते 50 साल हो गये हैं। और कितना खून बहाना बाकी है? लड़ना है हम दोनों को गरीबी से, बेरोजगारी से और पिछड़ेपन से। हम दोनों देशो के बीच व्यापार और आर्थिक संबंध बढ़ाएं। दो हजार किलोमीटर लम्बी सीमा के रहते हुए हमारा व्यापार किसी तीसरे देश के सहारे चले। ये समझ में नहीं आता। लोग आएं, जाएं। दोनों देशो के चुने हुए नुमाइंदों का भी आना-जाना अधिक हो। दोनों देशो के बीच सांस्कृतिक संबंध बढ़ें। बांटने वाली दीवारों में कुछ नए दरवाजे, नये खिड़कियां और रौशनदान खुलें।

लाहौर से आई 2 वर्ष की बच्ची हूर को हिन्दुस्तान में जो प्यार मिला, उसमें एक ऐसा पैगाम है, जिसे पाकिस्तान के हमारे दोस्त समझें। दोनों देशो के स्वाधीनता दिवस के अवसर पर मैं पाकिस्तान को भारत के साथ अमन पर चलने के लिए दावत देता हूं। रास्ता ऊबड-खाबड़ जरूर है, कहीं-कहीं सूरंग भी बिछी है, लेकिन जब हम साथ चलने लगेंगे, तो रुकावटें हटने लगेंगी।

मैं कुछ महीने पहले श्रीनगर गया था। इस महीने के अंत में फिर वहां जाउंगा। वहां की फिजा बदल रही है। पिछले साल इसी लाल किले से मैंने जब ऐलान किया था कि राज्य में चुनाव वक्त पर होंगे। और वे स्वतंत्र तथा निस्पक्ष होंगे। तो सबको भरोसा नहीं हुआ था। लेकिन हमने अपना वायदा पूरा किया। स्वतंत्र चुनाव ने इस बात को फिर एक बार साबित कर दिया है कि कश्मीर की जनता ने सीमा पार से आतंकवाद को ठुकरा दिया है। जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख के लोग लोकतंत्र चाहते हैं। वे अमन चाहते हैं। अपनी जिंदगी की खुशहाली को देखना पसंद करते हैं। जो लोग कश्मीर के बारे में बोलते हुए, आत्मनिर्णय के अधिकार की बात करते हैं, वे भारत को दूसरी बार सांप्रदायिक आधार पर बांटना चाहते हैं। उन्हें इसमें सफल नहीं होने दिया जायेगा।

इस साल एक लाख से ज्यादा सैलानी कश्मीर गये। अमरनाथ की यात्रा में भारी भीड़ रही। हिन्दुस्तान के अन्य सूबों से 6 हजार विद्यार्थी आज कश्मीर घाटी में पढ़ रहे हैं। अगले सप्ताह जम्मू व कश्मीर में भी मोबाइल टेलीफोन सेवा शुरू की जायेगी। जम्मू व कश्मीर की गुत्थी को बातचीत के द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। इस दिशा में जो प्रत्यन शुरू किये गये हैं, उन्हें हम आगे बढ़ायेंगे। उजड़े हुए लोगों को उनके घरों में फिर से बसाना है।

प्यारे देशवासियों, पिछले कुछ सालों में देश ने जो प्रगति की है, उसने मुझे नई आशा और विश्वास दिया है। कर्ज लेने वाला भारत, आज कर्ज दे रहा है। हमेशा विदेशी मुद्रा की कमी से

परेशान भारत ने, आज लगभग 100 बिलियन डॉलर विदेशी मुद्रा कमा लिये हैं। जरूरत की चीजों की कीमतें काबू में हैं। बाजार में किसी चीज का आभाव नहीं है। गरीबी घट रही है, और तेजी से हटाने का हमारा संकल्प है। अब टेलीफोन तथा गैस कनेक्सन के लिए प्रतिक्षा नहीं करनी पड़ती। मोबाइल फोन उपभोक्ताओं की संख्या 8 लाख से बढ़कर अब डेढ़ करोड़ हो गयी है। अगले साल डेढ़ करोड़ और नये लोगों को मोबाइल फोन मिलेंगे।

सड़कों की दुर्दशा से हम सभी परिचित हैं। आजादी के 50 साल के बाद भी लगभग 2 लाख गांव ऐसे थे जिनमें सड़के नहीं पहुंची थी। पहली बार केन्द्र ने इन गांवों को अच्छी सड़कों से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना शुरू की है। आजादी के पहले 50 साल में सिर्फ 550 किलोमीटर की 4 लेन वाले राज्यमार्ग बनाए गये थे, यानी प्रति वर्ष केवल 11 किलोमीटर। अब हम रोजाना 11 किलोमीटर की गति से 24 हजार किलोमीटर सड़के बनाएंगे। चौवन हजार करोड़ रुपये की राष्ट्रीय राज्यमार्ग विकास परियोजना पर काम शुरू हो गया है। इस रोज 3 लाख लोग काम कर रहे हैं। अगले साल इनकी संख्या बढ़कर 3 लाख से बढ़कर 6 लाख होगी।

कम्प्यूटर के क्षेत्र में लाखों नौजवानों को आकर्षक रोजगार मिले हैं। वे हमारे शहरों में बैठे-बैठे विदेशो से असली विदेशो के अस्पतालों में, वहां के कारखानों में और दफ्तरों के लिए सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। सॉफ्टवेयर का निर्यात 8 हजार करोड़ से बढ़कर अब लगभग 50 हजार करोड़ रुपये हो गया है। विज्ञान के क्षेत्र में भारत एक ऊंची उड़ान लेने के लिए तैयार है। मुझे ये बताने में बड़ी खुशी हो रही है कि सन् 2008 से पहले भारत चंद्रमा पर अपना अंतरिक्ष यान भेजेगा। जिसका नाम होगा चंद्रयान प्रथम।

कृषि तथा संबंधित क्षेत्रों के लिए कर्जे की रकम को बढ़ाया गया है। प्याज की दर को कम कर दिया है। खेती में नये प्रयोग करने हैं। पूंजी निवेश को बढ़ाने तथा किसानों की अन्य समस्याओं पर विचार करने के लिए शीघ्र ही हम एक राष्ट्रीय किसान आयोग गठित करेंगे।

पिछले दशको में हरित क्रांति तथा श्वेत क्रांति के जरिये भारत की कृषि को काफी बल मिला है। अब भारत के लिए जरूरी है खाद्य शृंखला क्रांति। जिसका लक्ष्य वर्ष 2010 तक भारत के किसान की औसत आमदनी दुगनी करना है। अनाज, फल तथा सब्जी के उत्पादन में प्रति वर्ष होने वाली हजारो करोड़ रुपये की क्षति को कम करना इस क्रांति का एक हिस्सा होगा।

किसान क्रेडिट कार्ड की सफलता को देखते हुए, हमने यह निर्णय लिया है कि सभी हकदार कारीगरो, बुनकरो तथा मछवारो के लिए भी क्रेडिट कार्ड की व्यवस्था की जायेगी। इनको दीये जाने वाले कर्ज की ब्याज की दर को घटा कर, 9 फीसदी किया जायेगा। इन वर्गो के लिए अंशुदायी बीमा योजना भी शुरू की जायेगी। अंत्योदय अन्न योजना के अंतर्गत देश की अत्यंत गरीब डेढ़ करोड़ परिवारो के लिए 2रु किलो गेंहू तथा 3रु किलो चावल की दर पर हर महीने 35 किलो अनाज मुहइया कराने का काम हो रहा है। इतना सस्ता अनाज पहले कभी नहीं किया गया। ये दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा योजना है।

सर्वशिक्षा अभियान के चलते अब कोई भी बालक, विशेषकर बालिकाएं प्राइमरी शिक्षा से वंचित नहीं रहेंगी। इसे सुचारू रूप से कार्यांवित करने के लिए इसी साल ढाई लाख नये शिक्षकों की नियुक्ती की जा रही है। पांचवी कक्षा तक के बच्चो को दोपहर का भोजन देने का कार्यक्रम कुछ राज्यों में चल रहा है। इसे अब हमने पूरे देश में चलाने का फैसला किया है, बाद में 10वी कक्षा

तक के छात्रों के लिए भी इसे लागू किया जायेगा। यह राष्ट्रीय कार्यक्रम अक्षय पात्र के नाम से चलेगा।

मैं स्वयं सेवी संगठनों, धार्मिक संस्थाओं तथा महिलाओं के स्रोत सहायता समूहों से अपील करता हूं कि वे इस प्रभावी रूप में अमल में लाने के लिए आगे आयें। देश के पिछड़े राज्यों में अच्छे अस्पतालों की सुविधाएं कम होने से वहां के लोगों की परेशानी को मैं जानता हूं। इसलिए प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजन के अंतर्गत दिल्ली के एम्स जैसे अत्याधुनिक सुविधा वाले 6 नये अस्पताल पिछड़े राज्यों में अगले 3 वर्ष में खोले जायेंगे।

मित्रों भारत को सुखे तथा बाढ़ के अधिकार से मुक्त कराने के लिए नदियों को जोड़ना है। इसके बारे में दशकों से चर्चा चलती आ रही है, अब हमने इसका बीड़ा उठाया है। मुझे आपको यह बताते हुए खुशी है, इस वर्ष के अंत तक दो नदी परियोजनाओं पर राज्य सरकारों के सहयोग से काम शुरू हो जायेगा। हम इन परियोजनाओं के लिए आवश्यक धन जुटाएंगे।

पिछले 5 सालों में जिस गति से गांव और शहरों में महान का निर्माण हुआ है, पहले कभी नहीं हुआ था। अब कितनी कम ब्याज दर पर मकानों के लिए कर्ज मिल रहा है, पहले कभी नहीं मिला था। नये मकानों के निर्माण से लाखों लोगों को रोजगार मिला है।

भारत पर्यटन के लिए असीम संभावनाएं हैं। इस ऐतिहासिक लाल किले को ले लीजिए, 350 साल के बाद पहली बार इसका पुनरुद्धार किया गया है। मैं देख रहा हूं कि मेरे सामने के मैदान में एक सुंदर उद्यान का रूप ले लिया है। इसे 15 अगस्त उद्यान के नाम से पुकारा जा सकता है। आप भी अपने गांव तथा शहर में अपने विरासत की संरक्षण के लिए ऐसे ही कोई खूबसूरत काम करके दिखाइए।

हमारी आर्थिक सुधार की नीति का एक ही मकसद है, हम ऐसी गतिशील अर्थव्यवस्था बनाना चाहते हैं, जो दुनिया के बाजार में सफल होने के साथ-साथ गरीब और उपेक्षित लोगों के प्रति संवेदनशील भी हो। हाल की कुछ प्राकृतिक आपदाओं तथा दुर्घटनाओं में जिन लोगों की असमय मृत्यु हुई है, उनके प्रति हम अपना शोक प्रकट करते हैं।

भाइयो और बहनो, भारत का उज्जवल भविष्य आज नौजवानों के हाथ लिख रहा है। हजारो वर्ष पूराना यह देश आज फिर एक बार युवा राष्ट्र बनकर एक नया इतिहास रचने को तैयार है। सौ करोड़ से अधिक की आबादी वाले इस देश में आज 60 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनकी आयु 30 वर्ष से कम है। पहले की किसी भी पीढ़ी से यह पीढ़ी अधिक सुशिक्षित है, अधिक महत्वाकांक्षी है। आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में, दुनिया में किसी से भी पीछे न हटने की जिद्द ठानने वाली यह पीढ़ी है।...(तालियां) आज दुनिया भर में हमारे नौजवानों के लिए अवसरों के दरवाजे खुल रहे हैं। आने वाले वर्षों और दशको में ये अवसर और बढ़ेंगे। इसलिए अभी से हमें अपने इन सभी युवाओं को साइंस, टेक्नोलॉजी, तथा अन्य नये-नये विषयों में अच्छी तरह से प्रशिक्षित करना होगा। इसलिए मेरी सबसे अपील है कि हम युवा भारत के दिल की धड़कनों को सुने, उनके सपनो को समझें, उन्हें हर प्रकार से प्रोत्साहन दें और उनका मार्गदर्शन करें।

देशवासियो, आज हमारे सामने इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम देश में शांति बनाए रखें। और भाईचारे की भावना को मजबूत करें। विकास के लिए शांति, सद्भावना तथा परस्पर सहयोग जरूरी है। संप्रदाय, जाति और बिरादरी के आधार पर जो समाज को बांटना चाहते हैं, वे

देश का नुकसान कर रहे हैं। भारत एक बहुधर्मी देश है। मजहब के आधार पर भेदभाव या ना इंसाफी करना, हमारी प्रकृति और संस्कृति के खिलाफ है। अल्प संख्यकों की हिफाजत और उनकी भलाई के प्रति हमें हमेशा जागरूक रहना है। उत्तरपूर्व के राज्यों में शांति वार्ता के सफल नतीजे निकल रहे हैं। बंदूक उठाने वाले हाथ, अब वहां के विकास में लगना चाहते हैं। सरकार उनके स्वागत के लिए तैयार है।

मित्रों, हम सब का, सरकार का और समाज का दायित्व है कि अपने अनुसूचित जनजातियों, अनुसूचित जातियों और पीछड़े वर्ग के बंधुओं को समान अवसर उपलब्ध करा कर व्यवस्था में भागीदार बनायें। इन तक पूरा आर्थिक तथा सामाजिक न्याय पहुंचाना, यह न केवल संवैधानिक कर्तव्य है बल्कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है। आरक्षण के नीति को सही ढंग से अमल में लाने में जो कठिनाइयां थी, उन्हें दूर कर दिया गया है। समाज में अस्पृश्यता घट रही है। परंतु इस कलंक को पूरी तरह मिटाना होगा।

आदिवासियों के विकास के लिए हमने एक नया मंत्रालय बनाया है। एक अलग आयोग भी बनाया है। पचास साल के बाद आज पहली बार अनुसूचित जनजाति की सूची की समीक्षा करके 100 से भी अधिक नये समूहों को इसमें जोड़ा गया है।

मित्रों अब तक अनुभव के बाद, मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि सरकारी तंत्र जिस पर नीति और निर्णयों को अमल में लाने की जिम्मेदारी है, अधिक दक्षता और जवाबदेही की जरूरत है। सरकारी दफ्तरों में सही काम होने भी देर लगती है। विलंभ से भ्रष्टाचार पनपता है। भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए मेरी सरकार हर स्तर पर तैयार है। कई दशकों से लम्बे लोकपाल विधेयक को कानून बनाने का हमने फैसला किया है। लोगों के दबावों के बावजूद मैंने स्वयं प्रधानमंत्री को भी इसकी जांच के दायरे में रखा है। ताकि आपका प्रधानमंत्री भी एक गलती करे, तो आप उसे पकड़ सकें। आर्थिक अपराधियों के खिलाफ कठोर कदम उठाए जा रहे हैं।

भाइयो और बहनो, राष्ट्रीय जनता की गठबंधन सरकार ने 5 साल पूरे किये हैं। केन्द्र में मिली-जुली सरकारों के अभी तक प्रयोग विफल हुए थे। हमने ऐसा सफल करके दिखाया है। लोगों में आज विकास की तीव्र भूख जागी है। वे ऐसा एक सुशासन चाहते हैं कि उनके जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए कुछ संकल्प हो और सक्षम भी। आज राजनैतिक क्षेत्र में जहां एक ओर मिलकर काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर बिखराव का भी दृश्य दिखाई देता है। प्रदेशों में विभिन्न दलों की सरकारें हैं। इनके साथ केन्द्र के सहयोग के रिस्ते बनाये हैं। विचारधारा के भिन्नता के कारण राजनीतिक भेव, भेदभाव करना हमें अमान्य है।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संसद तथा विधान सभाओं में 33 फीसदी सीटें आरक्षित रखने का प्रस्ताव, अब राष्ट्रीय संकल्प बन गया है। आज पंचायत और नगर पालिकाओं में 10 लाख से भी ज्यादा महिला सदस्य हैं। इनके अच्छे काम के लिए मैं उन्हें बधाई देता हूं। परंतु यह खेद की बात है कि संसद में आम राय न बनने के कारण मूलभूत में महिला आरक्षित विधेयक को पास करना मुश्किल हो गया है। अब एक नया प्रस्ताव आया है, कि 33 फीसदी सीटों को दोहरी सदस्यता वाली सीटें बनाया जाये, जिनमें एक सीट महिला के लिए आरक्षित हो। यह एक व्यवहारिक सुझाव है। इस सुझाव पर महिला आरक्षण के सभी समर्थकों को सकारात्मक दृष्टि से विचार करना चाहिए। यदि कोई दूसरा सुझाव हो, जिस पर आम सहमति बने, तो उसे कार्यान्वित

किया जाना चाहिए। जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारी बहने लम्बे अर्से से प्रतिक्षा कर रही हैं, अब उसमें और अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए।

प्यारे देशवासियों, आज देश एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां से वह एक लम्बी छलांग लगा सकता है। भारत को 2020 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के बड़े ध्येय को हासिल करने की तमन्ना सारे देश में बल पकड़ रही है। केवल एक पीढ़ी के अंदर भारत को गरीबी, बेरोजगारी और पीछड़ेपन के अभिश्राप से मुक्ति दिलाई जा सकती है। यह केवल दिवा सुवप्न नहीं है, इसे हकीकत में बदला जा सकता है। दुनिया में अनेक देशों ने इसे करके दिखाया है। जरा पीछे मुड़कर देखिए, बड़े-बड़े संकटों का मुकाबला करते हुए, भारत आगे बढ़ा है। आज जब अभिद्योदय का पर्व शुरू हुआ है, तो किसी के मन में असमंजस क्यों होना चाहिए ? आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम सब मिलकर काम करें, अनुशासन से चलें, नई सांस्कृतिक कार्य को अपनाएं, दूर दृष्टि से काम लें। यह प्राचीन और महान देश जिस समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतिभा और परिश्रम का मेल करके पराक्रम की पराकाष्ठा करेगा, तो निश्चय ही उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सफल होगा। लगभग 40 साल पहले मैंने एक कविता लिखी थी। जिसकी ही कुछ पंक्तियां मैं आपको सुना रहा हूं:-

"कदम मिलाकर चलना होगा, बांधाएं आती हैं तो आएं
घिरे प्रलय की घोर घटाएं, पांवों के नीचे अंगारे
सर पर बरसे यदि ज्वालाएं, निज हाथों से हंसते-हंसते
आग लगाकर जलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा ।
हास्य रुदन....
हास्य रुदन में, तुफानों में, अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, विरानों में, अपमानों में, सम्मानों में
उन्नत मस्तक, उभड़ा सीना, पीड़ाओं में पलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा। "

धन्यवाद।

बहनो, भाइयो और प्यारे बच्चो मेरे साथ तीन बार बोलिए-

जय हिंद..., जय हिंद..., जय हिंद....।

धन्यवाद।